इकाई 11 समाजवादी विश्व*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 पहली समाजवादी क्रांति रूस में ही क्यों हुई?
11.2.1 राजनैतिक ढ़ाँचा
11.2.2 किसान और मज़दूर वर्ग
11.2.3 राष्ट्रीय आत्म-निर्णय
11.2.4 विचार और संगठन
11.2.5 क्रांति के चरण
11.3 समाजवाद का निर्माण
11.4 नई आर्थिक नीति
11.5 योजना और औद्योगीकरण
11.6 कृषि का सामूहिकीकरण
11.7 आतंक और शुद्धीकरण
11.8 सारांश
11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

जैसाकि आप जानते हैं बीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप की राजनैतिक व्यवस्था पर तीन प्रमुख विचारधाराओं का प्रभाव रहा है। इनमें से उदारवादी जनतंत्र का अध्ययन आप कर चुके हैं। इस इकाई में समाजवाद और समाजवादी दुनिया की चर्चा की जाएगी। जैसाकि आप जानते हैं उन्नीसवीं शताब्दी से ही एक विचार के रूप में समाजवाद का अस्तित्व मौजूद था। परंतु रूस में हुई 1917 की क्रांति के बाद ही इसे ठोस राजनैतिक व्यवस्था के रूप में ढ़ाला जा सका। इस इकाई में रूसी क्रांति की जानकारी देने के साथ-साथ 1928 तक की घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस बारे में जानेंगे:

- रूस में उपस्थित उन परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे जिनके कारण पहली समाजवादी क्रांति संभव हुई;
- क्रांति के बाद रूस में समाजवाद के निर्माण की प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे;
- रूस में समाजवाद के निर्माण के महत्वपूर्ण चरणों के रूप में नई आर्थिक नीति का विवरण प्राप्त कर सकेंगे;
- रूस में योजना और औद्योगीकरण की प्रकृति,
- कृषि के सामूहिकीकरण का सार और किसान वर्ग पर इसके प्रभाग; और
- राजनीतिक कारण जो 1930 के दशक में आंतक और शुद्धीकरण का कारण बने।

---

*डॉ. नलिनी तनेजा (रिटायर्ड), स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

11.1 प्रस्तावना

आप समाज के बारे में समाजवादी दृष्टि का थोड़ा बहुत अध्ययन पहले ही कर चुके हैं। समाजवादी दलों द्वारा मज़दूरों से सम्पर्क विकसित करने से, आरंभिक बीसवीं शताब्दी के संघर्षों ने यूरोप के लोकप्रिय संघर्षों में नया आयाम जोड़ दिया। मज़दूर संघर्ष और समाजवादी दलों की गतिविधियां दोनों ही बीसवीं शताब्दी में ताकतवर जन आंदोलनों के रूप में उभरी। उनके सम्बंध से क्रांति को नए प्रतीक मिले और मजदूर वर्ग को एक नई शक्ति मिली; उदाहरणस्वरूप प्रदर्शन, आम हड़ताल, मज़दूरों का रंगमंच, लाल झंडा, मज़दूर दिवस के रूप में मई दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में 8 मार्च। हालांकि इनकी गतिविधियां पूरे यूरोप में फैली हुई थीं परंतु इसका सबसे अधिक प्रभाव रूस पर पड़ा जहाँ के उग्र सुधारवादी आंदोलनों ने पूँजीवादी विरोधी रुख और समाजवादी दृष्टिकोण अपनाया। 19वीं शताब्दी के अंत और आरंभिक बीसवीं शताब्दी में कई क्रांतिकारी लहरें आईं जिसकी परिणति पहली सामाजिक क्रांति के रूप में हुई। इस इकाई में हम इतिहास की प्रथम समाजवादी क्रांति की चर्चा करेंगे जिसे अक्टूबर क्रांति या 1917 की बॉलशेविक क्रांति के रूप में जाना जाता है। हम समाजवादी निर्माण के प्रथम अनुभव की भी चर्चा करेंगे और यह देखने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार इनकी नीतियां पूँजीवादी राज्यों से अलग थीं। यह इकाई रूस में 1930 के दशक के तीन महत्वपूर्ण विकासों के बारे में बताती हैः योजनाबद्ध औद्योगीकरण, कृषि का सामूहिकीकरण और 1930 के दशक में शुद्धीकरण।

11.2 पहली समाजवादी क्रांति रूस में ही क्यों हुई?

रूसी समाज में सचमुच क्या कुछ हो रहा था जिसके कारण यह सब संभव हुआ? अपने अन्तिम दिनों में कार्ल मार्क्स ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में रूस में बन रहे क्रांतिकारी माहौल की प्रशंसा की थी परंतु समाजवादी विचारधारा का सम्पूर्ण बल इस बात पर रहा था कि परिपक्व और सर्वाधिक विकसित पूँजीवादी देशों में ही क्रांति होगी। ऐसी कल्पना की गई थी कि पूँजीवादी व्यवस्था जब पूरी तरह परिपक्व हो जाएगी तो वह अपने अंतर्विरोधों, संघर्षों और तनावों से कमज़ोर पड़ने लगेगी। उन राष्ट्रों में निजी स्वामित्व और समाजीकृत उत्पादन के बीच विषम स्थिति पैदा हो जाएगी। वहाँ मज़दूर वर्ग को अपने जंजीरों के सिवा और कुछ नहीं खोना होगा। परंतु वास्तव में प्रथम समाजवादी क्रांति 'पिछड़े हुए' रूस में हुई। यहाँ के समाज में पूँजीवाद मौजूद था परंतु अभी भी यहाँ सामंती सामाजिक और आर्थिक शक्तियां जस की तस मौजूद थीं। मजदूर वर्ग अभी भी ज़मीन के साथ जुड़ा हुआ था और कृषक वर्ग मुख्यतः निजी भू-स्वामित्व की इच्छा रखता था। निश्चित रूप से रूस में देरी से हुए और बढ़ते हुए पूँजीवाद के अंतर्विरोधों के कारण वहाँ क्रांति का सामाजिक माहौल तैयार हुआ।

11.2.1 राजनैतिक ढ़ाँचा

पश्चिमी यूरोप में पूँजीवाद के विकास के साथ उदारवादी-संविधानवादी और संसदीय जनतंत्रों का उदय और विकास हुआ। 1917 तक रूस में जार का निरंकुश शासन कायम था। यूरोप के नागरिकों को सहज रूप में प्राप्त सभी व्यक्तिगत, नागरिक और मौलिक अधिकार तथा संगठन बनाने, हड़ताल करने और चुनाव का अधिकार जैसी सामूहिक अभिव्यक्तियों के सभी जनतांत्रिक रूपों पर रूस में प्रतिबंध था। संभवतः आप यह बात जानते हैं कि सम्पूर्ण रूसी समाज में केवल रूसी क्षेत्र ही शामिल नहीं था और इसमें केवल रूसी बोलने वाले लोग ही नहीं रहते थे। इस साम्राज्य में कई गैर-समुदाय और राष्ट्रीयताएं जैसे यूक्रेन, साइबेरिया, बाल्टिक राज्य आदि शामिल थे। रूस का निरंकुश शासन अपने

साम्राज्य की सभी राष्ट्रीयताओं को दबाकर रखता था और यूरोप में होने वाले सभी जनतांत्रिक मामलों के खिलाफ डटकर खड़ा था। इसीलिए इसे 'यूरोप का पुलिस मैन' कहा जाता था। नई सामाजिक तथा आर्थिक ताकतों का उदय से नई माँगों के परिप्रेक्ष्य में रूसी राज्य की प्रकृति लगातार असंगत होती जा रही थी।

11.2.2 किसान और मज़दूर वर्ग

परम्परागत तौर पर रूसी कृषि व्यवस्था में बंधुआ मज़दूरी की प्रथा प्रचलित थी जो भूमि और भू-सम्पत्तिवान से बंधे हुए थे। कृषिदासता की यह प्रथा 1861 में समाप्त कर दी गई और कृषिदास मुक्त हुए तथा उन्हें अपनी मर्ज़ी से कहीं भी आने जाने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई। परंतु 1861 के कृषि सुधारों से जार साम्राज्य की कृषि समस्या समाप्त नहीं हुई। कृषि में पूँजीवाद के विकास के बावजूद भू-सम्पत्तिवान कुलीनतंत्र का आधिपत्य बना रहा, किसान गरीब बने रहे और कृषि पिछड़ी रही। यहाँ तक कि कृषि के वाणिज्यीकरण होने तथा 'कुलक' नामक अमीर कृषकों के उदय के बावजूद ग्रामीण इलाकों में भूमि, लगान, मज़दूरी और सार्वजनिक ज़मीनों पर अधिकार को लेकर (जो भू-सम्पत्तिवान कुलीनतंत्र के पास सुरक्षित था) मौलिक टकराव की स्थिति बनी रही। अभी भी अधिकांश ज़मीन पर और समग्र रूप से कृषि व्यवस्था पर भू-सम्पत्तिवान कुलीनतंत्र का अधिकार था।

भू-सम्पत्तिवान कुलीनतंत्र के सामाजिक और आर्थिक प्रभुत्व के कारण राजनैतिक क्षेत्र में भी कुलीनतंत्र का दबदबा बना रहा जबकि 1861 के बाद ग्रामीण ढ़ाँचे में हुए टकराव के कारण आधुनिक किसान आंदोलन का जन्म हुआ जो धीरे-धीरे राजनैतिक रूप ग्रहण करने लगा। बड़े भू-सम्पत्तिवानों के स्वामित्व को समाप्त करने और किसानों के लिए ज़मीन की माँग उठने लगी जिसे बॉलशेविकों के सिवा न तो जार कुलीनतंत्र और न ही अन्य कोई राजनैतिक समूह मानने को तैयार था। इसके कारण किसान विद्रोह हुए और उनके द्वारा ज़मीन पर कब्ज़ा करने की माँग अक्टूबर 1917 की बॉलशेविक क्रांति का प्रमुख उद्देश्य रहा। इसके अलावा समाजवादी शासन व्यवस्था को मज़बूत बनाना भी क्रांति का उद्देश्य था।

रूसी औद्योगीकरण की प्रकृति और समय के कारण मज़दूर आंदोलन के लिए उपयुक्त माहौल तैयार हुआ। यह मज़दूर आंदोलन जुझारू और राजनैतिक था। रूसी समाज और राजनीति के विशिष्ट लक्षणों के कारण इस आंदोलन की प्रकृति सुधारात्मक की अपेक्षा क्रांतिकारी हो गई। देर से औद्योगीकरण होने और पश्चिमी देशों के स्तर तक पहुँचने के लिए औद्योगीकरण के आरंभिक चरणों में बड़े उद्योगों की स्थापना की गई। उसके विपरीत इंग्लैंड या फ्रांस में इसका क्रमशः और धीमी गति से विकास हुआ था। रूस में तेज़ी से हुए इस औद्योगीकरण के कारण वर्ग चेतना का भी शीघ्रता से विकास हुआ और बुर्जुआ वर्ग द्वारा सामाजिक तथा राजनैतिक वर्चस्व कायम करने से पहले ही एक संगठित जन आंदोलन की शुरुआत हो चुकी थी। रूस में यह मजदूर आंदोलन बुर्जुआ वर्ग, संभ्रांत शासन, पूँजीवाद और तानाशाही के खिलाफ था। इसके अलावा कोई प्रभावी कानून या मजदूर संघ के पास कोई अधिकार न होने से आर्थिक माँगों को लेकर किया गया संघर्ष भी राजनैतिक रूप लेने लगा क्योंकि हड़ताल करने का मतलब था कानून तोड़ना। प्रतिनिधि संस्थाओं की कमज़ोरी के कारण मज़दूर वर्ग के आंदोलन ने व्यवस्था उखाड़ फेंकने का क्रांतिकारी रास्ता अख्तियार किया। उन्होंने इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी की तरह सामाजिक-राजनैतिक समूहों के लिए अधिक प्रतिनिधित्व के ज़रिए इस पर नियंत्रण करने की कोशिश नहीं की। वस्तुतः मज़दूर संघों का जन्म 1905 की क्रांति के बीच से ही हुआ था। बड़े कारखाने देहातों में, शहर से बाहर और नगर की सीमाओं पर लगाए गए थे और एक विविध और विभेदित श्रमिक वर्ग (निपुण कारीगर, निपुण और अनिपुण कारखाना

मज़दूर, *कुस्तार* या घरेलू व्यवस्था में काम करने वाले मज़दूर उसके अलावा टेलीग्राफ, रेलवे और निर्माण कार्य में लगे मज़दूर) जिनमें से अधिकांश मज़दूरों का संबंध अभी तक अपनी ज़मीन से था, इन कारणों से आंदोलन को व्यापकता मिली और यह केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं रहा।

11.2.3 राष्ट्रीय आत्म-निर्णय

जार के शासन से राष्ट्रीय मुक्ति के साथ-साथ समाजवादी क्रांति की विजय हुई। राजनैतिक और सांस्कृतिक भेदभाव के कारण बाल्टिक क्षेत्र, मध्य एशिया, ट्रान्सकौकेशिया और अन्य क्षेत्रों के लोग अपने को अलग-थलग महसूस करते थे। जार की आर्थिक नीतियों के कारण ये इलाके आर्थिक दृष्टि से पिछड़े बने हुए थे। जार द्वारा यह प्रयत्न किया गया था कि इन इलाकों में मुख्य वर्ग खेती पर आश्रित रहे और लोग भूमि से बंधे रहें। इन स्थानों पर राष्ट्रीय आत्म-निर्णय, अपनी भाषा और संस्कृति के अधिकारों की माँग करने और सामान्य अवसर उपलब्ध कराने और यहाँ तक कि पृथक राजनैतिक पहचान प्राप्त करने के लिए एक मज़बूत आंदोलन उठ खड़ा हुआ। बॉलशेविकों ने किसानों के लिए भूमि की माँग का समर्थन किया और संबंध विच्छेद के अधिकार तथा स्वैच्छिक संघ बनाने के अधिकारों का समर्थन किया। अतएव इन क्षेत्रों में किसानों ने जार की तानाशाही शासन व्यवस्था के खिलाफ समाजवादी विकल्प की विजय में निर्णायक भूमिका निभाई और इस क्रम में राष्ट्रवादी आकांक्षाओं के उदारवादी विकल्पों पर तनिक भी विचार नहीं किया गया।

11.2.4 विचार और संगठन

आरंभिक बीसवीं शताब्दी में समाजवादी क्रांतिकारी प्रमुख राजनैतिक प्रवृत्ति थी जो किसानों के वर्ग हितों का प्रतिनिधित्व करती थी और किसानों को क्रांति की प्रमुख प्रेरक शक्ति मानती थी। दूसरी अन्य राजनैतिक प्रवृत्तियों में विभिन्न विचारों वाले उदारवादी रूस में पश्चिम यूरोप के संसदीय नमूने के तौर पर स्वीकार करते थे। मार्क्सवादी या सोशल डेमोक्रेट (साम्यवादी) की रणनीति और प्रेरणा मार्क्स के कम्युनिस्ट मेनिफैस्टो और उनके गोथा कार्यक्रम की आलोचना (साम्यवादी घोषणा-पत्र) से प्रभावित थी। इसके अलावा अधिकांश उग्र सुधारवादी वुद्धिजीवी वर्ग मार्क्स की पूँजीवादी आलोचना से काफी प्रभावित था। यूरोप में 1848 की क्रांति में उन्होंने यह अनुभव किया कि बुर्जुआ वर्ग ने उस समय क्रांति के साथ धोखा किया था और मज़दूर लगातार एक क्रांतिकारी शक्ति बने हुए थे। अतएव रूस ने पश्चिमी यूरोप के पिछे हटते हुए उदारवाद की अपेक्षा वहाँ के सर्वाधिक आमूल परिवर्तनवादी विचार को ग्रहण किया।

रूस में आरंभ से ही बुर्जुआ उदारवाद कमज़ोर था और आमूल परिवर्तनवादी वुद्धिजीवी वर्ग का समाजवादी रुझान और क्रांतिकारी नेतृत्व निर्णायक साबित हुआ। बॉलशेविकों ने उत्तर-क्रांतिकारी शासन व्यवस्था की राजनीति के रूप में समाजवाद की विजय का प्रतिनिधित्व किया।

लेनिन बॉलशेविक पार्टी के सर्वप्रमुख नेता थे। बॉलशेविक ने रूस में मार्क्सवाद को मात्र आरोपित नहीं किया। उन्होंने मार्क्सवाद के ढ़ाँचे में रूस की विशिष्ट क्रांतिकारी समस्याओं का व्यवहार्य निदान पाया। उन्होंने बताया कि रूस के पिछड़े माहौल में और बुर्जुआ वर्ग के अपेक्षाकृत कमज़ोर होने के कारण बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रांति लाने में उसकी भूमिका ढुलमुल होगी। मज़दूर आंदोलन का सामना कर रहा बुर्जुआ वर्ग फ्रांसीसी और अंग्रेज़ बुर्जुआ वर्ग की भूमिका नहीं दुहरा सकता। अतएव 'मज़दूर वर्ग का आधिपत्य' क्रांति के प्रथम बुर्जुआ जनतांत्रिक चरण के साथ-साथ इसके दूसरे समाजवादी चरण के लिए भी ज़रूरी था।

इसलिए क्रांतिकारी रणनीति में दूसरा बड़ा योगदान 'मज़दूरों और किसानों का गठबंधन' था जो कि संख्यात्मक रूप से छोटे श्रमिक वर्ग और किसानों के बहुमत के संदर्भ में था। इस प्रकार उन्होंने दो चरण की क्रांति और मजदूर वर्ग के नेतृत्व को अपनी रणनीति में शामिल किया। आरंभिक बीसवीं शताब्दी के क्रांतिकारी आंदोलनों ने उनकी रणनीति को काफी हद तक सही सिद्ध किया।

11.2.5 क्रांति के चरण

रूसी क्रांति के तीन अलग-अलग चरण माने जा सकते हैं जिसे पूरा करने में बारह वर्ष लग गए। प्रथम चरण के दौरान ड्यूमा कहे जाने वाले संसद का निर्माण हुआ। 1917 की फरवरी क्रांति को दूसरा चरण माना जा सकता है जिसमें केंद्र में जार के शासन के साथ-साथ अस्थायी सरकार की स्थपना की गई। अक्टूबर 1917 में क्रांति का तीसरा और अंतिम चरण पूरा हुआ जिसमें जार के शासन को उखाड़ फेंका गया और जन गणतंत्र की स्थापना हुई। आइए, इन तीनों चरणों पर विस्तार से विचार किया जाए।

9 जनवरी 1905 को मज़दूर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे; उन पर गोलियां चलाई गईं। इससे मज़दूर भड़क उठे और 1905 में पहली बार निरकुंश शासन पर आक्रमण किया गया। इसे खूनी रविवार के नाम से जाना जाता है। मज़दूर और किसान 'जनतांत्रिक गणतंत्र' की माँग करने लगे। उन्होंने किसानों, मज़दूरों और सैनिकों का निर्वाचित और जन आधारित राजनैतिक संगठन बनाया जिसे सोवियत के नाम से जाना जाता है। बाद में लेनिन ने इसे 'क्रांतिकारी शक्ति का भ्रूण' कहा और जो अन्ततः क्रांति के बाद राज्य के निर्माण का आधार बना जिससे समाजवादी राज्य ने सोवियत रूस का नाम ग्रहण किया। प्रथम विश्व युद्ध ने रूस की अर्थव्यवस्था और रूस के मज़दूरों की आजीविका को बुरी तरह प्रभावित किया जिसके कारण मौजूदा शासन व्यवस्था के खिलाफ विरोध का माहौल बना और इससे रूसी क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

1917 की फरवरी क्रांति ने तानाशाही पर अन्तिम प्रहार किया। पेट्रोगार्ड में महिला मज़दूरों के रोटी की कमी को लेकर किए गए प्रदर्शन से इस क्रांति का आरंभ हुआ जो दूसरे शहरों और गाँवों तक फैल गया। समाज के सभी वर्गों ने हड़ताल कर दी, किसानों के विद्रोह हुए और सेना के क्रांतिकारी कार्यवाही से निरकुंशता की रही सही उम्मीद भी समाप्त हो गई। रूसी निरकुंशता को उखाड़ फेंका गया और इसके स्थान पर उदारवादी बुर्जुआ के वर्चस्व वाली अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।

फरवरी 1917 की क्रांति में पहली बार राजनैतिक स्वतंत्रता अर्जित की गई। मौलिक और नागरिक अधिकारों का सृजन किया गया। हज़ारों छोटे-छोटे संगठनों द्वारा कारखानों, बैरकों, गाँवों और गलियों में सैकड़ों और हज़ारों पैम्फलेट बांटे गए। कारखाना समितियों, ग्रामीण परिषदों, सैनिकों समूहों जैसे मंचों के ज़रिए लोगों ने अपनी नियति का निर्माण करना चाहा। एक बार फिर शहरों और गाँवों में सोवियतों को चुना गया और एक बार फिर केंद्रीय सोवियत (जैसा कि 1905 में था) क्रांतिकारी शक्ति के वैकल्पिक स्रोत के रूप में उभरी और इसने अस्थायी सरकार का विरोध किया।

अस्थायी, सरकार में प्रतिनिधित्व पाए उदारवादी बुर्जुआ वर्ग के लोग अपनी क्रांति पूर्ण कर चुके थे; जबकि मज़दूर अभी अपनी क्रांति की शुरुआत ही कर रहे थे। फरवरी की क्रांति के बाद स्थापित नए शासन का यही प्रमुख अंतर्विरोध था और यह बहुत दिन तक कायम न रह सका। किसान निराश थे कि उन्हें ज़मीन नहीं मिली; सम्पूर्ण मज़दूर और सैनिक निराश थे क्योंकि युद्ध अभी जारी था। हड़तालों और प्रदर्शनों के ज़रिए असंतोष प्रकट किया

गया; किसानों ने ज़मीनों पर कब्जा कर लिया; भोजन की कमी और इसके मूल्य में वृद्धि होने से दंगे हुए, युद्ध समाप्त न होने से सैनिकों को घोर निराशा हुई जो भूमि वितरण में भी हिस्सा लेना चाहते थे। बॉलशेविकों ने जनता की भावनाओं के अनुरूप नारा दिया और वे उनके चहेते बन गए। उनका नारा थाः

- किसान के लिए ज़मीन
- युद्ध को तुरंत बंद किया जाए
- उद्योगों पर मज़दूरों का नियंत्रण हो
- राष्ट्रीयताओं को आत्म-निर्णय का अधिकार मिले, और सबसे ऊपर
- रोटी (ब्रेड)

शांति! भूमि! रोटी! प्रजातंत्र! तात्कालिक माँगें बन गईं। सभी जनसंगठनों में बॉलशेविकों को बढ़त हासिल हो गई और मज़दूरों और सैनिकों का बहुमत उनके पक्ष में थे। हालांकि बाद में एक शत्रुतापूर्ण प्रेस ने इसके विपरीत माहौल बनाने की कोशिश की परंतु इस क्रांति को जनाधार प्राप्त था और यह लगभग रक्तहीन क्रांति थी। सेना (जिसमें ज़्यादातर किसान शामिल थे) सहज़ रूप में क्रांतिकारी ताकतों की ओर खिंची चली गई। अस्थायी सरकार उखाड़ फेंकी गईं। इतिहास में पहली बार समाजवादी क्रांति वास्तविक रूप में सामने आई। नए राज्य ने अपने को मज़दूरों का राज्य कहा। एक अमेरिकी पत्रकार जॉन रीड ने अपनी पुस्तक 'टेन डेज दैट शूक द वर्ल्ड' में 1917 की अक्टूबर क्रांति का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है।

बोध प्रश्न 1

1) रूस का राजनैतिक ढ़ाँचा अन्य यूरोपीय देशों से किस प्रकार अलग था? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) रूस में सक्रिय विभिन्न राजनैतिक समूहों पर पाँच पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

3) रूसी क्रांति किन कारणों से हुई? 100 शब्दों में बताइए।

....

....

....

....

11.3 समाजवाद का निर्माण

क्रांति के देश में, समाजवाद की स्थापना में क्रांति के समान शौर्य और साहस भरे संघर्ष की ज़रूरत थी। बॉलशेविकों के सामने अपने प्रयोगों के लिए समाजवादी समाज का कोई नमूना उपलब्ध नहीं था। मार्क्स ने पूँजीवाद का विश्लेषण अवश्य किया था परंतु व्यवहार में समाजवाद का कोई विस्तृत और व्यवहारिक खाका उपलब्ध नहीं था। आरंभिक रूसी क्रांतिकारियों के सामने केवल उनके आदर्श और समाजवादी विचारकों के द्वारा दिये गये कुछ प्रमुख सिद्धांत थे। अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में आर्थिक विकास की दृष्टि से रूस अभी भी एक पिछड़ा हुआ देश था और आर्थिक विकास की एक ऐसी रणनीति बनाना आसान नहीं था जो पूँजीवादी व्यवस्था को पीछे छोड़ सके। इसके अलावा समाजवादी रूस को पूँजीवादी देशों के हमले का एक साथ सामना करना पड़ा। इस देश के प्रति उनका रवैया केवल मात्र शत्रुतापूर्ण नहीं था बल्कि वास्तव में वे इस नए राज्य के खिलाफ युद्ध कर रहे थे; दूसरी ओर रूस के पूर्ववर्ती भू-सम्पत्तिवानों और पूँजीपतियों ने गृह युद्ध छेड़ रखा था।

तीव्र आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत मौलिक अधिकारों की गारंटी, सैद्धांतिक तौर पर जितने आसान लगते हैं व्यवहार में उन्हें प्राप्त करना इतना आसान नहीं है। समाजवाद के निर्माण के संबंध में तीखे राजनैतिक मतभेद थे; रणनीति और उद्देश्य पर बहस छिड़ी हुई थी और नए-नए प्रयोग तथा नीतियां बन रही थीं। पिछड़ेपन के कटु यथार्थ, सम्पूर्ण पूँजीवादी विश्व की शत्रुता और गृह युद्ध के परिप्रेक्ष्य में कई सपने अधूरे रह गए, कई आदर्श धूल चाटने लगे, कई इच्छाएं अस्वीकार कर दी गईं। यूरोप के कई अन्य देशों में क्रांतियां सफल नहीं हुईं। हालांकि बॉलशेविकों को 'समाजवादी विश्व क्रांति' में अपनी कई नीतियों की सफलता पर विश्वास था। मज़दूर राज्य को कई प्रकार के खतरों से बचाना था। इस क्रांति की रक्षा में अनेक लोग मारे गए थे, जितने इस क्रांति को करने में नहीं मरे थे। परंतु उन्होंने दुनिया को यह दिखा दिया कि विकास और आधुनिकता का यह भी एक वैकल्पिक रास्ता हो सकता है। उनकी उपलब्धियां कुछ मायनों में निश्चित रूप से मील का पत्थर थीं।

पूँजीवाद के वैधानिक और आर्थिक आधारों को समाप्त करना और समाजवाद की आधारशिला रखने के लिए प्रारंभिक कानून बनाए गए। इसका उद्देश्य पहले की विदेश नीति और निजी मुनाफे, व्यक्तिवाद और उपभोक्तावाद जैसे समस्त पूँजीवादी मूल्यों में आमूल परिवर्तन करना था।

सबसे पहले के कदमों में, उद्योगों में निजी संसाधनों को उन्मूलन किया गया और उस पर मज़दूरों का नियंत्रण स्थापित किया गया। कारखानों का मज़दूर राज्य ने अधिकार संभाल लिया और मज़दूरों को प्रतिनिधित्व देकर उत्पादन प्रक्रिया में मज़दूरों का नियंत्रण स्थापित करने का प्रयोग किया गया और उन्हें कारखानों में अधिकार दिए गए। सोवियत रूस और अन्य समाजवादी देशों में सामाजिक योजना के तहत उद्योग पर राज्य का स्वामित्व बना रहा परंतु युद्ध के दिनों में और बाद के वर्षों में केंद्रीकृत योजना के समय मज़दूरों के नियंत्रण से कई मुश्किलें सामने आईं।

कृषि के क्षेत्र में भी हस्तक्षेप किए गए। नवम्बर 1917 की भू-राज्याज्ञा के द्वारा जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी गई, पूरी ज़मीन का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और निजी रूप से खेती करने के लिए तथा पीढ़ी दर पीढ़ी उपयोग करने के लिए ज़मीन किसानों के बीच बांट दी गई। परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर ज़मीन वितरित की गई। इस ज़मीन और

इस पर किए जाने वाले श्रम से होने वाली आय पर निजी या व्यक्तिगत अर्थात परिवार के सदस्यों का अधिकार होता था; परंतु वे यह ज़मीन बेच नहीं सकते थे और न ही दूसरों के श्रमों का शोषण करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता था। इस प्रकार, कृषि व्यवस्था से शोषण आधारित संबंधों को समाप्त कर दिया गया; और भूमि निजी सम्पत्ति नहीं रह गई, हालांकि उत्पादन और स्वामित्व का सामाजिकीकरण नहीं किया गया था।

28 दिसम्बर 1917 को सभी निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और फरवरी 1918 में, बैंक के सभी भागीदारों (शेयर होल्डर) का स्वामित्व समाप्त कर दिया गया और सभी विदेशी ऋणों को नकार दिया गया। रूसी क्रांति ने वर्ग आधारित समाज को भी नष्ट कर दिया। वेतन में अंतर जरूर बना रहा और युद्ध की परिस्थितियों और सीमित उत्पादकता के कारण लोगों को काम और योग्यता के अनुरूप वेतन नहीं मिल सका परंतु पूँजीवाद की अपेक्षा काफी हद तक सामाजिक न्याय की माँग पूरी हुई क्योंकि शारीरिक श्रम की अब उपेक्षा नहीं की गई, मज़दूरों और अधिकारियों के वेतन में पहले से कम अंतर रहा और कोई भी बिना काम किए या अपने लिए दूसरे से काम कराकर कमाई नहीं कर सकता था।

राजनैतिक स्तर पर नए राज्य ने स्वयं को 'सर्वहारा वर्ग की तानशाही' अर्थात् समाजवादी जनतंत्र के रूप में परिभाषित किया। इसमें अल्पसंख्यक लोगों की अपेक्षा बहुसंख्यक जनता के हितों को प्राथमिकता दी गई; क्योंकि जनता में मज़दूर और कामगार लोग बहुसंख्यक थे। दूसरे, इसके ज़रिए क्रांति ने काम करने वाले लोगों का राजनैतिक आधिपत्य कायम किया जबकि पूँजीवादी व्यवस्था और बुर्जुआ जनतंत्र में राष्ट्रीय संसाधनों पर निजी नियंत्रण होता है। तीसरे, इस नए राज्य ने जनतंत्र की एक अधिक सकारात्मक अवधारणा सामने रखी जहाँ फ्रांसीसी विरासत को शामिल करते हुए व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने की ज़्यादा ज़िम्मेदारी राज्य ने अपने ऊपर ले ली; यहाँ पूँजीवादी अहस्तक्षेप की अवधारणा के लिए कोई जगह नहीं थी जिसमें राज्य के अहस्तक्षेप से व्यक्ति की स्वतंत्रता जुड़ी होती है और व्यक्ति को काफी हद तक अपनी रक्षा करने के लिए अकेला छोड़ दिया जाता है।

क्रांति के कुछ महीनों के भीतर सरकार ने पुरानी सरकार की सभी गुप्त संधियां प्रकाशित कर दी और यह घोषणा की कि सोवियत रूस और अन्य देशों के बीच होने वाली संधियां स्पष्ट और सार्वजनिक होंगी। इसी शांति संबंधी राज्याज्ञा से उन्होंने शांति प्रस्ताव सामने रखा जिसमें आक्रमण, आधिपत्य या युद्ध-हर्जाने कोई स्थान नहीं दिया गया और उन क्षेत्रों से अपना दावा वापस ले लिया जिसके लिए जार की सरकार और अस्थायी सरकार भी लड़ रही थी। सार्वजनिक तौर पर वे उपनिवेशवाद के खिलाफ खड़े हुए और सभी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्षों का उन्होंने समर्थन किया। यदि रूसी क्रांति न होती तो प्रथम विश्वयुद्ध के अंत में विलसन के चौदह सूत्र सामने नहीं आते। जार साम्राज्य में शामिल सभी क्षेत्रों में रहने वाली राष्ट्रीयताओं के आत्म निर्धारण और संबंध-विच्छेद के अधिकार को बॉलशेविकों ने मान्यता दी।

बॉलशेविक नेतृत्व ने, पुरानी व्यवस्था के संस्थागत ढ़ाँचे को तोड़कर और नई की स्थापना कर, अपना वादा पूरा किया। किसानों और मज़दूरों ने अपने ढंग से क्रांतिकारी परिवर्तन में भूमिका अदा की। आरंभिक वर्षों में स्थानीय स्तरों पर सहज भाव से और संगठित रूप में क्रांति आगे बढ़ती चली गई। भूमि कम्यूनों, ग्राम सभाओं और किसान सोवियतों ने गाँवों में सामाजिक और राजनैतिक बदलाव के स्वायत अंग के रूप में कार्य करना शुरू किया। बॉलशेविकों द्वारा मान्यता प्राप्त कृषि क्रांति की शुरुआत वस्तुतः यहीं से हुई थी और इसी से क्रांति के बाद का ग्रामीण ढ़ाँचे का केन्द्र निर्मित हुआ था। कुछ ही वर्षों में लाखों एकड़ खेतों की मिल्कियत बदली और उन्हें किसानों में बांट दिया गया। ग्रामीण अंचलों में पुरानी राज्य व्यवस्था पूर्णतः नष्ट कर दी गई।

शहरों में भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति देखने को मिली। सोवियतों को सभी अधिकार देने और मज़दूरों के नियंत्रण के नारे गूंजने लगे। इस नारों को कार्य रूप देने के लिए स्थानीय रूप से दो तिहाई कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया गया और मज़दूरों ने कारखानों और उसके उत्पादन पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और इसे कारखानों के मजदूरों द्वारा अधिग्रहण के रूप में पहचाना गया। मज़दूर संघ, कारखाना समितियां, मज़दूर सोवियत और दलीय संगठनों ने जगह-जगह पर पूँजी का सम्पत्तिहरण पूरा किया।

आमतौर पर चारों ओर जनतंत्रीकरण, विकेंद्रीयकरण, स्थानीय पहल और लोकप्रिय निर्णय लेने की प्रवृत्ति थी। सम्पूर्ण जार साम्राज्य में यही क्रांति की सक्रियता और बॉलशेविकों के विधानों पर आधारित नए संस्थागत ढ़ाँचों का अधार बना। बॉलशेविक गहरे रूप में इस प्रक्रिया से जुड़े हुए थे, हालांकि इन प्रयत्नों के पीछे कई प्रकार की खींचतान चल रही थी और केंद्रीय नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक ढ़ाँचे, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और मज़दूर किसान गठबंधन को संस्थागत रूप प्रदान कर क्रांति से प्राप्त लाभों को ठोस रूप देने का प्रयत्न कर रहा था।

11.4 नई आर्थिक नीति

राजनैतिक और आर्थिक संकट से निपटने के लिए नई आर्थिक नीति (एनईपी) का निर्माण हुआ था परंतु इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक बदलाव लाना था जिसके कारण समाजवाद की ओर बढ़ने की रणनीति में परिवर्तन आया। इस नई आर्थिक नीति (एनईपी) के द्वारा विभिन्न ताकतों के सामाजिक-आर्थिक संतुलन में बदलाव लाया गया।

मार्च 1921 से निर्णायक परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हुई। अनाज़ वसूली के स्थान पर एक निश्चित कर लगाया गया। कर के रूप में अनाज़ प्राप्त किया गया। यह कर अनाज़ वसूली के लक्षणों की तुलना में काफी कम था। अब किसान अतिरिक्त अनाज अपने पास रख सकते थे और निजी तौर पर उसे बेच सकते थे। चूँकि अभी भी कृषि व्यक्तिगत उत्पादन पर आधारित थी जिसमें बाज़ार में अनाज बेचकर और व्यापार कर 'मुनाफा' कमाया गया जो दूसरों के श्रम के शोषण पर आधारित था।

1924 में वस्तु कर के स्थान पर मुद्रा कर लगाया गया और निजी व्यापार को कानूनी बनाया गया। 1925 में ज़मीन को पट्टे पर देने और मज़दूर रखने पर लगे प्रतिबंध को ढ़ीला कर दिया गया तथा कृषि कर और भी घटा दिया गया। अब शुद्ध आय पर कर लगाया गया। इसकी दरें अलग-अलग थीं। एक चौथाई हेक्टेयर से कम ज़मीन रखने वालों पर 5% और तीन हेक्टेयर से ज़्यादा ज़मीन रखने वालों पर 17% कर लगाया गया। कर की अलग-अलग दरों के बावजूद, कर अदायगी के बाद कई कारणों जैसे व्यापार की स्वतंत्रता और अधिक जमीन पट्टे पर लेने और श्रम को मजदूरी पर रखने की स्वतंत्रता जैसे कारणों से किसानों के बीच विभेदीकरण बढ़ा और कृषक समुदाय के भीतर एक धनी या 'कुलक' वर्ग का उदय हुआ। एक बार कर देने के बाद किसान व्यापार करने और अपना ग्राहक तय करने के लिए स्वतंत्र था। वह अधिक ज़मीन पट्टे पर दे सकता था और श्रम खरीद सकता था। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच बाज़ार सम्पर्क फिर से स्थापित हुआ, विनिमय में मुद्रा की भूमिका बढ़ी, केंद्रीकृत वितरण प्रणाली में कटौती हुई और व्यक्तिगत अनुबंधों को बढ़ावा मिला।

इसके साथ-साथ औद्योगिक क्षेत्र और इसके संगठनात्मक रूपों में भी परिवर्तन आया। 17 मई 1921 को छोटे उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की राज्याज्ञा को निरस्त कर दिया गया और छोटी इकाइयों का विराष्ट्रीयकरण कर दिया गया और इनमें से कुछ को उनके पूर्व मालिकों

को सौंप दिया गया। केवल बैंकिंग, विदेश व्यापार और बड़े पैमाने पर होने वाले व्यापार तथा भारी उद्योग पर राज्य का नियंत्रण रहा जिसे लेनिन अर्थव्यवस्था के 'प्रभावशाली शिखर' कहता था। जुलाई 1921 तक सभी लोगों को पट्टे पर लघु उद्योग लगाने का अधिकार दिया गया। राज्य उद्यमों को वाणिज्यिक लेखा-जोखा के आधार पर काम करना था; वेतन और मज़दूरी नगद में भुगतान किया जाना था। औद्योगिक प्रतिष्ठानों से यह उम्मीद की जाती थी कि वे अपने बल पर कच्चा माल हासिल करें और अपने उत्पादों को अन्य औद्योगिक उद्यमों या कृषीय उत्पादों से स्वतंत्र अनुबंधों द्वारा प्राप्त करें। इसके कारण निर्णय लेने की प्रक्रिया विकेंद्रित हुई, प्रतियोगिता बढ़ी, वाणिज्यीकरण बढ़ा और निजी उद्यमियों के एक नए वर्ग का जन्म हुआ। इससे पूँजीवादी मूल्यों और नैतिकताओं को बढ़ावा मिला जिससे सहकारिता और राज्य के बड़े उद्योगों पर भी प्रभाव पड़ा जो अभी भी प्रमुख उत्पादन को नियंत्रित करते थे।

नई आर्थिक नीति (एनईपी) के द्वारा आने वाले वर्षों में आर्थिक समृद्धि प्राप्त की गई और अधिकांश किसानों का भरोसा हासिल करने में मदद मिली। 1918-21 की नीतियों के समान इस नीति का स्वरूप भी अस्थाई था और यह भविष्य की ओर बढ़ने का एक साधन मात्र था। 1920 के आरंभ में अकाल का प्रभाव दिखाई पड़ता है परंतु इसके बाद अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे सुधरने लगी और 1923 तक यह स्तर युद्ध-पूर्व स्तर के एक तिहाई तक पहुँच गई। परंतु यदि युद्ध साम्यवाद चरण से तुलना की जाए तो 1928-29 तक कृषि उत्पादन में लगभग 40%, कुल बोये क्षेत्र में 45% और अनाज क्षेत्र में 39-43% की वृद्धि हुई। उद्योग में हुई वृद्धि की तुलना में यह वृद्धि दर ज़्यादा थी जिसके परिणामस्वरूप औद्योगिक वस्तुओं के दाम बढ़े और उद्योग और कृषि उत्पादों के मूल्यों के स्तर का अंतर बढ़ा जिसमें उद्योग फायदे की स्थिति में थे, हालांकि इससे बाजार संबंधी दिक्कतें पैदा हुईं। इससे शहर और गाँव, किसानों और मज़दूर के बीच होने वाली संभावित टकराव को रोकने के लिए उद्योगों पर दाम कम करने हेतु दबाव डाला गया। परंतु यह समस्या इतनी जल्दी सुलझने वाली नहीं थी क्योंकि नई आर्थिक नीति (एनईपी) में कृषि निजी क्षेत्र में थी और अधिकांश उद्योगों पर अभी भी राज्य का एकाधिकार था।

दूसरी ओर नई आर्थिक नीति (एनईपी) से आए बदलावों से समस्याएं और सामाजिक अंतर्विरोध सुलझ न सके क्योंकि इनका उदभव केवल युद्ध परिस्थिति या किसी खास नीतियों के कारण नहीं हुआ था बल्कि इसकी जड़ें व्यापक सामाजिक अंतर्विरोधों में निहित थी जो इसलिए था क्योंकि किसानों की संख्या ज़्यादा थी और क्रांतिकारी मज़दूरों से उनके बीच में समाजवाद के निर्माण का आह्वान किया गया था। व्यक्तिगत कृषि अर्थव्यवस्था में वर्ग शोषण की गुंजाइश तो कम थी परंतु इसके बावजूद यह बुर्जुआ संबंधों की ही अभिव्यक्ति थी। जब तक भूमि पर निजी अधिकार रहा, एक परिवार निजी तौर पर काम करता रहा और जबतक निजी तौर पर आमदनी होती रही, तब तक समाजवादी ढर्रे से खेती करने में किसानों को कोई विशेष रुचि नहीं थी। नई आर्थिक नीति (एनईपी) में इसका हल यह था कि किसानों को खुद व खुद सामूहिकता के लाभ दिखाई पड़ने लगेंगे। परंतु ट्रैक्टर खरीदने या खेतों पर एक साथ काम करने से समस्या का समाधान न हो सका क्योंकि व्यक्तिगत खेतिहरों के समान सहकारी समितियों और सामूहिक खेत भी उसी बाज़ार और मुनाफे के सिद्धांत पर काम कर रहे थे।

बाज़ार के प्रवेश और इसके परिणामस्वरूप कृषि का स्तरीकरण होना तथा निजी उद्यमियों का उदय होना साम्यवादी दर्शन में अंतर्निहित समतावादी तत्व से मेल नहीं खाता था। स्वैच्छिकता को आर्थिक प्रोत्साहन द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। इसमें सामूहिकता श्रम के सामाजिक लाभों को तो बढ़ावा नहीं मिला बल्कि इसमें सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिवादी कृषक सिद्धांत को ही बढ़ावा मिला।

विकसित समाजवाद, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज़रूरत के अनुसार वस्तुएं/लाभ प्राप्त कर सकता था, के लिए औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने की ज़रूरत थी। नई आर्थिक नीति (एनईपी) में अर्थव्यवस्था के व्यक्तिगत तथा निजी क्षेत्र से समाजवादी क्षेत्रों की ओर संसाधनों के हस्तांतरण की गुंजाइश कम थी। चूंकि सोवियत रूस उपनिवेशों के शोषण के पक्ष में नहीं था इसलिए यह एक बड़ी समस्या थी। इस नई आर्थिक नीति (एनईपी) के परिवर्तनों के द्वारा सोवियत संघ को एक विकसित समाजवादी समाज में परिवर्तित करना संभव नहीं था। इसके अलावा इसके द्वारा लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार नहीं किया जा सकता था तथा एक अधिक मानवीय, वैज्ञानिक और समता उन्मुख मनुष्य का निर्माण भी संभव नहीं था। जब व्यापार इकाइयों, सोवियतों और अन्य लोकप्रिय संगठनों को ज़्यादा अधिकार दिए गए तबतक उनमें स्वेच्छा की बजाए आर्थिक लाभ की भावना घर कर चुकी थी। इस बृहद प्रिरिप्रेक्ष्य में हमें भविष्य में दल में होने वाली बहसों, सामूहिकता अभियान और पार्टी तथा लोकप्रिय संगठनों के बीच होने वाले टकरावों को देखना होगा।

बोध प्रश्न 2

1) यूएसएसआर में समाजवादी राज्य द्वारा क्या नये उपाय किये गये थे? 100 शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

2) नई आर्थिक नीति (एनईपी) पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

11.5 योजना और औद्योगीकरण

1920 से ही दस से पन्द्रह साल की दीर्घकालिक योजना का विचार पनप रहा था। 1925 के आँकड़ों से वार्षिक नियंत्रण और अनुमान के लिए वार्षिक योजना पूर्वानुमान तैयार किया जा रहा था। 1926 से राज्य योजना आयोग (गौसप्लान) और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सर्वोच्च परिषद (VSNKH) ने भावी पंचवर्षीय योजना के कई प्रारूप बना डाले थे। इसका दोहरा महत्व था। इससे औद्योगीकरण के प्रति प्रतिबद्धता की शुरुआत हुई और एक विस्तृत योजना के द्वारा राज्य के निर्देशन में विकास के लिए एक व्यापक योजना बनी। दूसरे, इसे कार्यान्वित करने के लिए एक मध्यम अवधि की योजना बनाई गई।

1926 तक अधिकांश सोवियत उद्योग फिर से 1913 के उत्पादन स्तर तक पहुँच गए और कुछ उद्योगों ने यह स्तर भी पार कर लिया। इसके बाद सरकार ने अपनी औद्योगिक नीति में निम्नलिखित पक्षों पर बल दिया :

- समाजवादी ढर्रे पर तीव्र औद्योगीकरण; और
- ऐसी औद्योगीकरण पद्धति जिसमें बड़े पैमाने के भारी उद्योग और मशीन विनिर्माण का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर वर्चस्व होगा।

सोवियत रूस में एक देश में समाजवाद का निर्माण हो रहा था और वह चारों ओर से शत्रुतापूर्ण पूँजीवादी विश्व से घिरा हुआ था; इसलिए सोवियत उद्योग का इस अर्थ में आत्म-निर्भर होना ज़रूरी था कि किसी प्रमुख उत्पाद के लिए उसे पूँजीवादी देशों पर आश्रित न रहना पड़े। एक न्यूनतम ऐतिहासिक अवधि में, कम से कम समय में पूँजीवादी देशों से आगे बढ़ना एक प्रमुख उद्देश्य था।

इसके लिए पूँजी, उपकरण, रसायनों और अन्य विकसित उत्पादों के उत्पादन की क्षमता हासिल करना आवश्यक था जिसका जार युग से विरासत में प्राप्त उद्योगों में अभाव था। आत्मनिर्भरता के लिए भी सोवियत उद्योग को अत्यधिक विकसित प्रौद्योगिकी को हासिल करना अनिवार्य था। इस बात पर भी सहमति थी कि उत्तर पश्चिम, मध्य यूरोपीय रूस और यूक्रेन जैसे आधुनिक उद्योग के परम्परागत केंद्र में नए कारखाने नहीं लगाए जाएंगे बल्कि इनकी स्थापना उराल और साइबेरिया तथा पिछड़े मध्य एशिया में की जाएगी। प्रतिरक्षा की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए लोहे और इस्पात निर्माण, अभियांत्रिकी और अस्त्र बनाने वाले उद्योगों की स्थापना सोवियत रूस के उन क्षेत्रों में की गई जहाँ अपेक्षाकृत आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता था।

प्रथम पंचवर्षीय योजना, 1929-33

चूंकि 1928 औद्योगिक वृद्धि के लिए एक सफल वर्ष था अतः पुराने योजना लक्ष्यों को संशोधित कर आगे बढ़ाया गया। वास्तव में किसी को भी एक सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की कार्य-पद्धति की भविष्यवाणी करने के लिए सांख्यिकी सूचना या सैद्धांतिक समझ नहीं थी। जैसे-जैसे नई आर्थिक नीति (एनईपी) के तहत बाज़ार अर्थव्यवस्था के अंतर्गत वृद्धि की दर को लेकर प्रमुख सोवियत नेता स्टालिन अधीर होते गए वैसे-2 सतर्क योजना का स्थान राजनीति की माँगों ने ले लिया। आर्थिक रूप से व्यवहारिक लक्ष्यों के सावधानीपूर्वक तैयार किये गये अनुमानों के अनुसार चलने वाली अर्थव्यवस्था (नियोजित) की जगह एक 'आदेशात्मक' अर्थव्यवस्था का आगमन हुआ जो राजनैतिक आदेशों और सरकार की प्राथमिकताओं से निर्देशित होती थी।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में लोहे और इस्पात पर अधिक ध्यान दिया गया परंतु ट्रैक्टर्स संयंत्रों को भी उच्च प्राथमिकता दी गई। विदेश से मशीनों के आयात की निर्भरता को समाप्त करने के लिए मशीन और औज़ार उद्योग का तेज़ी से विकास हुआ। स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत नेतृत्व कुछ पूर्वाग्रहों से युक्त था जिसका प्रभाव योजना पर पड़ा जो संतुलित और यथार्थवादी आर्थिक विकास की प्रक्रिया के रूप में योजना के लिए हानिकारक था। उनका मानना था कि बड़े-बड़े औद्योगिक परिसरों के निर्माण से ही औद्योगिक विकास हो सकता था। इसमें ऐसे बड़े औद्योगिक परिसरों के निर्माण की माँग की गई जिन्हें चलाने या बनाने के लिए संसाधन मौजूद नहीं था। इसे गिगंतोमेनिया (विशालता का उन्माद) कहा जा सकता है। परिणामस्वरूप इसे बनाने में ज़्यादा समय लगा और बार-बार काम रुका तथा कुछ काम अधूरे भी छूट गए। आकार के साथ-साथ सब कुछ जल्दी में भी करने का आग्रह था। इसलिए इस समय 'रफ्तार सबका निर्णय करती है' का नारा दिया गया। उसे स्पष्ट करने के लिए, 1929 के मध्य में औपचारिक रूप से प्रथम पंचवर्षीय योजना अपनाई गई; इसकी शुरुआत अक्टूबर 1928 से मानी गई जब इसकी पूर्वव्यापी शुरूआत मानी गई और

अन्ततः जनवरी 1933 में इसकी समाप्ति की घोषणा की गई। इस प्रकार प्रथम पंचवर्षीय योजना पाँच वर्षों में ही नहीं बल्कि सवा चार वर्षों में ही सम्पन्न हो गई।

मात्रात्मक रूप में यानि उत्पादन की मात्रा के रूप में योजना के लक्ष्य निर्धारित किए गए। योजना में उत्पादन बढ़ाने के लिए वास्तविक कच्चे माल के संसाधनों की उपलब्धता कहाँ से होगी उसका बहुत ही अस्पष्ट संकेत दिया जाता था। उद्योग से यह उम्मीद की जाती थी कि वह केवल योजना के लक्ष्यों को ही पूरा न करें बल्कि उससे आगे भी बढ़ जाए। योजना का उद्देश्य संसाधन आवंटित करना या संतुलित माँगों की पूर्ति करना नहीं था बल्कि अर्थव्यवस्था को हड़बड़ी में आगे बढ़ाना था। उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता में तेज़ी से कमी आई और नई मशीने महंगी होने के बावजूद काफी खराब किस्म की थीं।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के मिले-जुले परिणाम सामने आए। हालांकि धातु उत्पादन बढ़ाने के लिए सब कुछ त्याग दिया गया परंतु कोयला, तेल, कच्चा लोहा और लौहपिंड (pig iron) का उत्पादन उम्मीद से काफी कम हुआ। मशीनरी और धातु कर्म में निर्धारित लक्ष्य से ज्यादा उत्पादन हुआ परंतु ऐसा भी अंशतः आँकड़ों के सांख्यिकीय हेर-फेर से हुआ। 1940 में ही इस्पात उत्पादन, 1951 में बिजली उत्पादन और 1955 में तेल उत्पादन का लक्ष्य पूरा हुआ। भारी उद्योग में तेज़ी से विकास के लिए उपभोक्ता वस्तुओं, कृषि और थोड़े समय के लिए सैन्य शक्ति की भी बलि दे दी गई।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान राज्य ने संभवतः आपूर्ति और वितरण के संगठन का सर्वाधिक कठिन कार्य किया। एक दशक पूर्व गृह-युद्ध के दौरान ऐसा करने का असफल प्रयत्न किया गया था, इसलिए राज्य ने शहरी अर्थव्यवस्था, वितरण और व्यापार का पूरा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। इस बार 1980 के दशक तक यह स्थिति बनी रही। 1920 के दशक के अंत से निजी उत्पादन और व्यापार में कटौती की जाने लगी। नई आर्थिक योजना (एनईपी) के लोगों (निजी व्यापारियों) के खिलाफ तेज़ी से कार्रवाई की गई। उनके खिलाफ अखबारों में दुष्प्रचार किया गया, कानूनी और वित्तीय स्तर पर उन्हें परेशान किया गया और 1928-29 में 'सट्टेवाजी' के लिए कई निजी उद्यमियों को गिरफ्तार कर लिया गया। 1930 के दशक के आरंभ में छोटे कारीगरों और दुकानदारों से भी उनका व्यापार छीन लिया गया था या उन्हें राज्य नियंत्रित सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए बाध्य किया गया। अभी तक व्यापार और वितरण का वैकल्पिक ढ़ाँचा स्थापित नहीं हुआ था। कृषि की सामूहिकता के साथ ही नई आर्थिक नीति की मिश्रित अर्थव्यवस्था जिसमें राज्य और निजी क्षेत्र मिल-जुलकर काम करते थे, पूर्णतया समाप्त हो गई।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना, 1933-37

फरवरी में द्वितीय पंचवर्षीय योजना लागू की गई। इसके तीन निर्देशक सिद्धांत इस प्रकार थे:

- सुदृढ़ीकरण;
- तकनीक की विशेषज्ञता; और
- जीवन स्तर सुधारना।

इस योजना में तर्कसंगत योजना के सिद्धांत प्राप्ति के पास आया। अधिक संतुलित और वास्तविक उत्पादन के लक्ष्य रखे गए। उद्योगों की उत्पादकता बढ़ाना और निपुणता हासिल करना मुख्य उद्देश्य हो गया।

इस योजना में उत्पादक वस्तुओं की अपेक्षा उपभोक्ता वस्तुओं में अधिक निवेश और उत्पादन वृद्धि पर बल दिया गया। नगद मज़दूरी में वृद्धि और खुदरा वस्तुओं की कीमतों में कमी आने से शहरों में रहने वाले मज़दूरों के वास्तविक वेतन के दुगने होने की उम्मीद की गई।

दूसरी योजना के दौरान बड़ी संख्या में औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित किए गए। इसका मतलब यह हुआ कि 1927 तक 80% औद्योगिक उत्पादों का उत्पादन नए या पूरी तरह पुनर्निर्मित उद्यमों में होने लगा। इस योजना के दौरान भारी उद्योगों के लक्ष्य लगभग पूरे कर लिए गए और मशीनों तथा बिजली के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई।

हालांकि उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन उम्मीद से कम बढ़ा और 1928 के मुकाबले 1937 में ज़रूरी घरेलू वस्तुओं का प्रति व्यक्ति उपभोग कम रहा। मैग्निटोगोर्सक, कुजनेस्क और जापोरोझे में धातुकर्म के सयंत्र पूर्ण होने से सोवियत रूस की विदेशी पूँजीगत वस्तुओं पर निर्भरता कम हो गई, भुगतान संतुलन का भार कम हुआ और पुराने ऋणों को चुकाने में सहूलियत हुई। 1937 तक आधाभूत मशीनें और प्रतिरक्षा सामान सोवियत रूस में बनाए जाने लगे। इस योजना के दौरान मध्य एशिया और कज़ाकिस्तान में पिछड़े राष्ट्रीय गणतंत्रों को विकसित करने का प्रयत्न किया गया। हालांकि सीमित संसाधनों के उपयोग को देखते हुए आर्थिक दृष्टि से यह सबसे अच्छा तरीका नहीं था।

नियोजित औद्योगीकरण के परिणाम

1928 के बाद के दशक में विश्व अर्थव्यवस्था के इतिहास में सोवियत उद्योगों का विकास अभूतपूर्व दर और गति से हुआ। सोवियत सरकारी आँकड़ों के अनुसार 1928 के स्तर की तुलना में 1937 में औद्योगिक उत्पादन 446% बढ़ गया, और सबसे रूढ़िवादी पश्चिमी आकलन के अनुसार 239% की वृद्धि हुई। इसी प्रकार सोवियत आंकड़ों के अनुसार वृद्धि दर 18% और पश्चिमी आँकड़ों के अनुसार यह वृद्धि 10.5% थी।

सोवियत सरकारी आँकड़ों के अनुसार विश्व उत्पादन में सोवियत रूस का हिस्सा जहाँ 1913 में 2.6% और 1929 में 3.7% था वहीं 1937 में यह बढ़कर 13.7% हो गया। सोवियत रूस एक तरफ ऊँचाइयों, को छू रहा था जबकि पश्चिमी देश भयंकर मंदी और व्यापक बेरोज़गारी के दौर से गुज़र रहे थे। 1928 में सोवियत रूस का औद्योगिक उत्पादन जर्मनी, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन जैसे द्वितीय श्रेणी के पूँजीवादी देशों के स्तर का था। 1937 तक केवल संयुक्त राज्य अमेरिका इससे आगे रह गया। तब तक प्रमुख यूरोपीय शक्तियों के मुकाबले सोवियत संघ की उत्पादन शक्ति दोगुनी हो चुकी थी। सोवियत उद्योग बड़े पैमाने के उद्योग में परिणत हो गयाः 1913 में सोवियत औद्योगिक उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा लघु उद्योगों में होता था जबकि 1937 तक यह अनुपात गिरकर मात्र 6% रह गया।

पश्चिम से मशीनों और जानकारियों का भारी मात्रा में आयात कर प्रमुख नए उद्योगों की स्थापना की गई। 1937 तक आते-आते सोवियत संघ बड़ी मात्रा में लोहा और इस्पात तथा बिजली के उपकरण, ट्रैक्टर, फसल कटाई के उपकरण, टैंक और हवाई जहाज़ के साथ-साथ सभी प्रकार के मशीनी उपकरण बनाने लगा; और सभी उद्योगों में प्रौद्योगिकी का स्तर ऊपर उठा। श्रम उत्पादकता (कार्यरत प्रति व्यक्ति उत्पादन) में प्रतिवर्ष औसतन 6% की वृद्धि हुई। 19वीं शताब्दी में किसी भी समय ब्रिटेन या संयुक्त राज्य अमेरिका में इतनी तेज़ी से वृद्धि नहीं हुई थी।

तृतीय पंचवर्षीय योजना, 1938-41

1938 और 1941 के बीच तीसरी पंचवर्षीय योजना का साढ़े तीन वर्ष इसी में चला गया। तब जर्मनों ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया। 1 जून 1941 में द्वितीय विश्वयुद्ध से योजना में बाधा पड़ी और यह कभी पूरी नहीं हो पायी। इस समय भी पाँच वर्षों के दौरान प्रभावी प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य रखा गया : औद्योगिक उत्पादन में 92, इस्पात में 58, मशीन और अभियांत्रिकी में 129। एक बार फिर उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन की अपेक्षा भारी उद्योग को प्राथमिकता दी गई थी।

बोध प्रश्न 3

1) योजनाबद्ध औद्योगीकरण से आप क्या समझते हैं? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) प्रथम दो पंचवर्षीय योजनाओं ने रूसी अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

11.6 कृषि का सामूहिकीकरण

पिछले भाग में औद्योगीकरण पर बातचीत करने के क्रम में हमने देखा कि सोवियत नेतृत्व ने सफलतापूर्वक अपने देश को विकसित औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिणत कर दिया। हालांकि कृषि में प्रमुख बदलाव लाए बिना औद्योगीकरण संभव नहीं था। गृहयुद्ध के बाद उत्पाद में हुई पर्याप्त वृद्धि के बावजूद प्रति हेक्टेयर उत्पादन और श्रम उत्पादकता दोनों ही दृष्टियों से सोवियत कृषि किसी भी प्रमुख यूरोपीय देश से बहुत पिछड़ी हुई थी। अधिकांश उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर राज्य ने उद्योग के एक बड़े हिस्से पर सफलतापूर्वक अपना नियंत्रण मज़बूत किया परंतु कृषि क्षेत्र में निजी कृषक खेतों की मौजूदगी के कारण कृषि क्षेत्र में उत्पादन और विपणन निर्णयों पर राज्य का नियंत्रण नहीं था और कृषि केंद्रीय योजना और नियंत्रण योजना के दायरे से बाहर थीं।

बोलशेविकों का मानना था कि पूँजीवादी कृषि के निजी खेतों की जगह सामाजिक या सामूहिक कृषि को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। बड़े खेतों में अधिक उत्पादन संभव होगा क्योंकि इनमें मशीनों और उर्वरकों का इस्तेमाल अच्छे ढंग से किया जा सकता था। इनसे औद्योगीकरण के लिए कृषि अधिशेष का निर्माण होगा। इसके अलावा उत्पादन संसाधनों को एक बड़े खेत में एकत्र करके लगाने से किसानों के बीच सम्पत्ति की असमानता भी दूर होगी। बोलशेविकों का मानना था कि किसानों को सामूहिक और समाजवादी खेती के लिए

राजी करने में काफी वक्त लगेगा और यह दुरूह प्रक्रिया होगी। अपने एक लेख 'सहयोग पर' में लेनिन ने लिखा था कि सरकार को धीरे-धीरे किसानों को इस बात के लिए राजी करने का प्रयास करना चाहिए कि वे अपने निजी खेत छोड़ दें और सामूहिक खेतों में मिल-जुलकर काम करें। इसके लिए किसानों को आधुनिक उपकरण, ऋण और कृषि संबंधी सभी प्रकार की सहायता दी जानी थी।

नई आर्थिक नीति में विकसित प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर बल नहीं दिया गया जिससे कि किसानों को सामूहिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता। जब तक सोवियत रूस में ट्रैक्टर आए अधिकांश बोलशेविकों का मानना था कि समाजवादी कृषि की तैयारी के लिए कई कदम उठाने होंगे। किसानों को धीरे-धीरे सामूहिक खेती की ओर बढ़ना होगा। इसके लिए पहले उपभोक्ता वस्तुओं को बेचने, कृषि उत्पादों के विपणन और आपूर्ति के लिए सहकारी समितियां बनानी होगी और मशीन, बीज, भूमि सुधार, निर्माण के लिए सहकारी समितियों को ऋण उपलब्ध कराना होगा और अंत में उन्हें सामूहिक खेती के लिए प्रेरित करना होगा।

1920 के दशक में कृषिशास्त्रियों और भूमि चकबंदी विशेषज्ञों को कुछ किसानों को अपनी भू-जोतों का सुदृढ़ीकरण करके सामूहिक खेती के लिए प्रेरित करने में थोड़ी सफलता मिली। परंतु अभी काफी कम किसान इस प्रकार की खेती के लिए राजी थे। यह सोचकर कि सहकारी समितियों के निर्माण से किसानों में सामूहिकता की भावना बढ़ेगी, सोवियत राज्य ने सहाकरी समितियों को आसान ऋण, कर छूट और दुर्लभ विनिर्मित उत्पादित वस्तुओं की आपूर्ति में प्राथमिकता देने का वादा किया। परंतु सहकारी समितियां भी बहुत कम संख्या में किसानों को आकर्षित करने में सफल रही।

ग्रामीण पूंजीवाद के प्रसार से किसानों के बीच बढता विभेदीकरण सोवियत नेतृत्व के लिए चिंता का विषय था। ग्रामीण पूँजीवाद से केवल अमीर कृषकों या कुलक को ही फायदा होना था जिसकी कीमत पूरे कृषक समुदाय को चुकानी पड़नी थी। तीन तरीकों से किसानों के बीच विभेदीकरण बढ़ रहा था, जैसे पट्टे पर ज़मीन देना; ऋण, पशु, उपकरण और मशीन की उपलब्धता; और मज़दूरों को मज़दूरी पर रखना। कुलक को परिभाषित करने में निम्नलिखित मानदंड बनाये गये थे – जो मज़दूर रखते थे, खरीदकर या पट्टे पर ज़मीन का अधिग्रहण; जिनके पास बड़ी मिल्कियत थी और जो कृषि के उत्पादन के साधनों को पट्टे पर उठाया करते थे तथा जिनकी वाणिज्यिक और वित्तीय कारोबार से आमदनी थी। परंतु कभी भी कुलक की स्पष्ट और सुनिश्चित परिभाषा प्रस्तुत नहीं की जा सकी।

नई आर्थिक नीति (एनईपी) में कृषि की कमज़ोरियां

नई आर्थिक नीति के दौरान किसानों के खेती करने का तरीका और प्रौद्योगिकी काफी पिछड़ी हुई थी। 1927 में, खेती योग्य ज़मीन का 88 प्रतिशत हिस्सा छोटे-छोटे खेतों में विभक्त था और पाँच प्रतिशत से कम खेतों की पूरी तरह या आंशिक रूप से बाड़बंदी की गई थी। खेतों के छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटे होने के कारण खेती की आधुनिक तकनीकों और बेहतर उपकरणों का उपयोग संभव नहीं था। तीन खेतों में अदल बदल कर फसल उगाने की व्यवस्था थी। खेतों में दो फसलें उगाई जाती थीं; और पहले चक्र में शरद ऋतु में राई, गेहूँ तथा दूसरे चक्र में वसंत ऋतु में गेहूँ या अन्य फसल बोई जाती थी और तीसरे चक्र में खेत परती छोड़ दिया जाता था; इसे तीन चक्रीय खेती व्यवस्था के रूप में जाना जाता था और सोवियत संघ में यही पद्धति सबसे ज़्यादा प्रचलित थी। इसके अलावा इससे भी आदिम दो खेतों पर खेती करने या स्थानांतरित खेती प्रथा भी मौजूद थी। इसके परिणामस्वरूप एक तिहाई हिस्सा हमेशा परती पड़ा रहता था।

सरकार जल्द से जल्द प्रौद्योगिकी में सुधार लाना चाहती थी परंतु यह इतना आसान नहीं था। 1927 में रूसी संघ के लगभग एक चौथाई किसानों के पास घोड़ा या बैल नहीं था और एक तिहाई किसानों के पास खेत जोतने के उपकरण नहीं थे। अधिकांश किसानों के पास बिना घोड़े के उपयोग किए जानेवाले उपकरण थे। मशीनों का इस्तेमाल मुख्य तौर पर अनाज उत्पादन करने वाले प्रमुख देहाती क्षेत्रों में ही होता था।

अनाज का उत्पादन और विपणन

हालांकि 1920 के दशक तक अनाज का उत्पादन युद्ध पूर्व स्तर तक पहुँच गया था परंतु 1920 के दशक में प्रथम विश्व युद्ध के पहले की तुलना में अनाज का विपणन काफी कम हुआ था। ऐसा अंशतः ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि के कारण हुआ 1913 और 1926 के बीच 60 लाख आबादी बढ़ी जबकि 1913 की तुलना में इस समय प्रति व्यक्ति अनाज उत्पादन में 16 प्रतिशत की कमी आई।

एक प्रमुख समस्या यह थी कि कृषि उत्पादों की बिक्री के लिए एक से अधिक बाज़ार थे। अन्न और अन्य फसलों के बाज़ारों में राज्य और सहकारी प्रयत्नों का हिस्सा काफी कम था और निजी बाज़ार तितिर-बितर थे परन्तु उनमें उत्पादकों को लाभ के कई विकल्प उपलब्ध थे। राज्य खरीद अभिकरणों की अपेक्षा किसानों के लिए निजी बाज़ार में अनाज बेचना ज़्यादा लाभप्रद था क्योंकि यहाँ ऊँची कीमतें मिलती थीं। निजी व्यापारियों से किसानों को अपनी ओर खींचना राज्य की एक बहुत बड़ी समस्या थी।

व्यापार की शर्तें या औद्योगिक खुदरा मूल्यों और राज्य द्वारा कृषि वसूली मूल्य के बीच का संबंध युद्ध पूर्व समय की अपेक्षा किसानों के लिए कम अनुकूल था। अपने उत्पादों के लिए प्रतिकूल मूल्य अनुपात के अलावा युद्ध पूर्व समय की अपेक्षा किसानों की औद्योगिक वस्तुओं तक पहुँच भी कम हो गई। 1920 के पूरे दशक में औद्योगिक वस्तुएं महंगी, खराब कोटि की और दुर्लभ हो गईं।

राज्य के अनाज का वसूली मूल्य (जागतोवकी) इतना कम होता था कि इससे अक्सर उत्पादन की लागत भी नहीं निकल पाती थी। पशुधन उत्पाद और औद्योगिक फसलों का मूल्य किसानों के अधिक अनुकूल था और इससे अनाज विपणन को धक्का पहुँचा।

1917-20 की कृषि क्रांति के बाद गाँवों में सामाजिक और आर्थिक संगठनों में हुए परिवर्तन से भी कृषि विपणन में गिरावट आई। बड़ी निजी सम्पदाओं के पुनर्विभाजन से वे कृषि इकाइयां समाप्त हो गईं जो अधिक बाज़ारोन्मुख थीं।

1927-28 का वसूली संकट

1927 की शरद ऋतु, की फसल अच्छी होने के बावजूद किसान अपेक्षाकृत कम अनाज बाज़ार में ले गए और सरकार इतना आशाजनक स्तर पर अनाज न खरीद सकी जिससे शहर के लोगों और सेना का भरण-पोषण तथा मशीनों के आयात के लिए अनाज का निर्यात किया जा सके। यदि राज्य निजी बाज़ारों के मूल्यों का मुकाबला करने के लिए अनाज का वसूली मूल्य बढ़ाता तो औद्योगिक विकास के लिए उपलब्ध राशि में कटौती करनी पड़ती।

1927-28 के दौरान औद्योगिक निवेश में हुई तीव्र वृद्धि अक्टूबर 1927 के बाद से होने वाले अनाज संकट का प्रमुख कारक था। भारी उद्योग में निवेश के स्थानांतरण के कारण उपभोक्ता वस्तुओं की और भी कमी (वस्तु-अकाल) पड़ गई; और अनाज का राज्य वसूली मूल्य कम होने के कारण इनकी लागत और भी महंगी पड़ती थी।

इस वस्तु-अकाल के जवाब में किसानों ने 'उत्पादन हड़ताल' कर दी और राज्य द्वारा निर्धारित मूल्यों पर सरकार को अनाज बेचने से मना कर दिया। किसानों ने या तो निजी व्यापारियों को ऊँचे दामों पर अनाज बेचा या कर चुकाने के लिए महंगी औद्योगिक फसलों या पशु उत्पादों की बिक्री की।

दूसरे शब्दों में, 1927 का संकट इस अर्थ में कोई आर्थिक संकट नहीं था जिसमें बाज़ार-तंत्र बिखर गया हो या उत्पादकता क्षमता कम हो गई हो। यह इस बात से स्पष्ट है कि फसल का बड़ा हिस्सा बाज़ार में बेचा गया था पर अक्सर यह निजी व्यापारियों को बेचा गया। किसान अधिशेष उत्पादन के लिए तैयार थे और उनके पास इसकी क्षमता भी थी परंतु वे चाहते थे कि अपने इस अधिशेष से वे औद्योगिक वस्तुएं खरीद सकें।

दिसम्बर 1927 में स्टालिन ने कहा कि किसानों के छोटे-छोटे और बिखरे खेतों को सुदृढ़ करने का काम धीरे-धीरे शुरू किया जाना चाहिए। इसके लिए ज़ोर-जबरदस्ती नहीं की जानी चाहिए बल्कि समझाने बुझाने (प्रदर्शन ओर अनुनय) का रास्ता अख्तियार करना चाहिए। अगले महीने जनवरी 1928 में उन्होंने कहा कि "हम कुलक की सनक पर अपने उद्योग को आश्रित नहीं कर सकते; (सामूहिक कृषि) पूरे ज़ोर-शोर से लागू करनी होगी.... ताकि तीन या चार वर्षों (1931 या 1932 तक) के भीतर वे राज्य के अनाज की ज़रूरत के कम से कम एक तिहाई हिस्से की आपूर्ति कर सकें।"

पार्टी नेतृत्व ने किसानों से सुलह की अपेक्षा टकराव का रास्ता अपनाया। 1928 के आरंभ में बाज़ार बंद कर दिए गए और किसानों तथा व्यापारियों से अनाज ज़ब्त कर लिया गया। जिन लोगों ने अनाज छिपाने या दबाने और आपूर्ति करने में आनाकानी की उन्हें जेल में बंद कर दिया गया और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। इसके परिणामस्वरूप राज्य अधिक मात्रा में अनाज वसूली करने में कामयाब रहा।

1928 की गर्मी में पार्टी ने पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक तेजी से ज़्यादा से ज़्यादा अनाज वसूलने का अभियान छेड़ा। नवंबर में प्राधिकारियों ने पाँच महीने के भीतर प्रमुख अनाज उत्पादक क्षेत्रों में व्यापक पैमाने पर सामूहिकीकरण की नीति लागू करने की घोषणा की। 1928 में प्रमुख अनाज उत्पादक क्षेत्रों यूक्रेन और उत्तरी कौकेशस में पैदावार अच्छी नहीं हुई। देश के दूरस्थ पूर्वी भागों (वोल्गा क्षेत्रों, कज़ाकिस्तान, यूराल और साइबेरिया) में पैदावार सर्वोत्तम हुई परंतु यहाँ राज्य वसूली-तंत्र सबसे कमज़ोर था, सूचना, संचार आदि अधिसंरचना अल्प-विकसित थी जो जाड़े में ज़्यादा ही धीमी हो जाती थी। विनिर्मित उत्पादित वस्तुओं की कमी से संकट और भी गहरा हो गया। अनाजों के विपणन में तेजी से गिरावट आई और राज्य की एजेन्सियाँ अनाज वसूली में असफल रही। राइ, (एक प्रकार का अनाज जिसका उत्पादन यूरोप में होता है) गेहूँ और खाद्यान्नों की कम संग्रह के कारण राज्य को अनाज के निर्यात में कटौती करनी पड़ी और शांति काल में भी राशन व्यवस्था पुनः लागू की गई।

सोवियत नेताओं के सामने दो विकल्प मौजूद थे। वे नई आर्थिक नीति, संतुलित औद्योगीकरण, धीरे-धीरे सामूहिकीकरण और किसानों को बाज़ार में अधिक अनाज लाने के लिए कृषि आपूर्ति मूल्य का समायोजन का रास्ता अपना सकते थे; बुखारिन जैसे नेताओं ने इसी प्रकार की नीति की वकालत की थी। इसके अलावा वे ज़ोर-जबरदस्ती से सामूहिकीकरण और औद्योगीकरण की नई उग्रनीति अपना सकते थे। स्टालिन ने दूसरा विकल्प चुना।

सामूहिकीकरण नीति के अन्तर्गत गाँव और जिलों में बड़े-बड़े सामूहिक खेतों का निर्माण करना था। 1929 के वसंत में व्यापक पैमाने पर सामूहिकीकरण अपनाने के लिए कुछ ज़िलों

को चुना गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग सभी परिवारों को सामूहीकृत किया गया। जुलाई के आरंभ तक ऐसे लगभग 11 जिलों को चुना गया।

जिस समय व्यापक पैमाने पर सामूहिकीकरण किया गया उसके लिए कोई लम्बी चौड़ी योजना नहीं बनाई गई। यहाँ तक कि प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि नीति में भी कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं किया गया। यह मान लिया गया कि 1934 में चार में से तीन किसानों के खेत अभी भी निजी मिल्कियत में रहेंगे और अनाज की मंडी में आधे से ज़्यादा अनाज की पूर्ति यही करेंगे। सामूहिकीकरण आरोपित करने का निर्णय तीव्रता से लिया गया। यह न तो पार्टी का निर्णय था और न ही इसमें कानूनी समर्थन था। एक वर्ग के रूप में कुलक को समाप्त करना था और पूरे ग्रामीण इलाकों में सामूहिकीकरण का अभियान चलाना था और साथ-साथ गाँवों को 'कुलक विहीन' बना देना था। अनाज वसूली अभियान और किसानों को जबरन कोलखोज (सामूहिक खेतों) में मिलाने का कार्यक्रम एक साथ मिला दिया गया।

इस सामूहिक खेतों के बारे में कोई ढ़ाँचा या संगठन नहीं बनाया गया; यह भी नहीं तय किया गया कि निर्णय किस प्रकार लिया जाएगा और सदस्यों को भुगतान किस प्रकार किया जाएगा। सात सप्ताहों के भीतर फरवरी 1930 तक लगभग आधे किसान सामूहिकीकरण अभियान की लपेट में आ गए थे।

किसानों द्वारा सामूहिक खेती का प्रतिरोध

किसानों पर जबरदस्ती सामूहिकता थोप दी गई जिसका किसानों ने जमकर निष्क्रिय प्रतिरोध और यत्र-तत्र सशस्त्र प्रतिरोध भी किया। किसानों ने शासन का सक्रिय प्रतिरोध किया और चारों ओर हज़ारों किसानों ने जन प्रदर्शन किए। इसके अलावा 'आतंकवादी गतिविधियां' हुईं जिसमें लोगों को मारा पीटा गया, हत्याएं की गईं, आगजनी और लूटपाट मचाई गई। कुल मिलाकर किसानों का यह प्रतिरोध स्थानीय और मुखर था परंतु यह अर्ध-सैन्य नहीं था। समृद्ध किसानों का प्रतिरोध सबसे ज़्यादा मुखर था परंतु यह स्पष्ट था कि किसानों का हर वर्ग इससे प्रभावित हुआ था और सामूहिकीकरण के विरोध में सारे किसान शामिल थे।

कोलखोज (सामूहिक भू-क्षेत्र) को अपने पशु सौंपने की अपेक्षा कई किसानों ने अपने पशुओं की हत्या कर दी (16 जनवरी 1930 की राज्याज्ञा के द्वारा इस प्रकार के पशुवध पर प्रतिबंध लगाया गया था और इस अपराध के लिए सम्पत्ति जब्त की जा सकती थी और कारावास या देश निकाला की सजा हो सकती थी) या नज़दीक के शहर में जाकर उसे बेच दिया। इसके परिणामस्वरूप 1928 के मुकाबले 1933 में एक तिहाई भेड़, आधे घोड़े और सुअर तथा 54 प्रतिशत कम पशु रह गए।

कृषि अर्थव्यवस्था पर हमले करने के साथ-साथ परम्परागत कृषक संस्कृति के केंद्र में ऑर्थोडोक्स चर्च के खिलाफ भी एक उग्र अभियान चलाया गया। सभी ऐतिहासिक चर्चों को ध्वस्त कर दिया गया और अनेक पादरियों को बंदी बना लिया गया। मठ बंद कर दिए गए, हालांकि इनमें से अधिकांश नमूने के तौर पर कृषि सहकारी समितियां चला रहे थे और हज़ारों भिक्षुओं और मठवासिनियों को साइबेरिया भेज दिया गया। 1930 के अंत तक लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण चर्च बन्द हो चुके थे। कुलक विरोधी अभियान के द्वारा लगभग 1,000,000 किसान परिवार (औसतन प्रति गाँव एक परिवार) या लगभग 50 से 60 लाख लोग अपनी ज़मीन और घर से हाथ धो बैठे।

रूस के देहातों में एक वास्तविक गृह युद्ध छिड़ा हुआ था। बचे हुए पशुधन के रेवड़ और वसंत में होने वाली खेती बीज के अभाव में घोर संकट में थी। इस प्रकार शासन को एक विनाशकारी स्थिति का सामना करना पड़ा। मार्च 1930 में स्टालिन ने अपने एक लेख ''डिजी विद् सक्सेस'' में उन्होंने इस ज़्यादती का आरोप अपने स्थानीय अधिकारियों पर लगाया। उसने थोड़े दिन के लिए अस्थायी रूप से सामूहिक खेतों का अभियान बंद कर दिया और आदेश दिया कि कुलकों को छोड़कर सब लोगों के एकत्र किए पशु उनके मूल मालिकों को लौटा दिए जाएं और इस प्रकार कृषक बाज़ार को पूरी तरह समाप्त करने का प्रयत्न खत्म हुआ। किसानों ने यह समझा कि अनिवार्य सामूहिकीकरण वापस ले लिया गया है और अधिकांश किसान तीव्रता से सामूहिकीरण से अलग हो गए। सरकारी आंकड़े के अनुसार 1 मार्च और 1 जून 1930 के बीच सोवियत रूस में सामूहीकृत कृषक परिवारों का प्रतिशत 56 से गिरकर 23 तक पहुँच गया और अगस्त में यह 21.4 रह गया।

कोलखोज के एक नए मॉडल अधिनियम में इसके सदस्यों को एक गाय, भेड़ और सुअर रखने और अपने छोटे व्यक्तिगत खेत पर खुद काम करने के लिए कृषि औज़ार रखने की रियायत दी। इन छोटे निजी खेतों से किसानों को आमदनी होती थी, उनका खाना-पीना चलता था और अनाज बेचकर वे अपनी छोटी-मोटी ज़रूरतें पूरी करते थे।

सामूहिकीकरण अभियान थोड़े दिनों के लिए ही शिथिल किया गया था। 1930 में मौसम अनुकूल था और फसल बेजोड़ रही। जैसे ही राज्य के भंडारों में अनाज भरा वैसे ही इस बार स्पष्ट निर्देशों के साथ सामूहिकीकरण अभियान दुबारा शुरू कर दिया गया। कोलखोज संगठनकर्ताओं और अध्यक्ष के रूप में काम करने के लिए हज़ारों साम्यवादी और शहरी मज़दूरों को लामबंद्ध करके गाँवों में भेजा गया। ग्रामीण जनता से धीरे-धीरे मनाया गया और उन पर भेदभाव पूर्ण कर लादा गया ताकि वह सामूहिक खेतों में लौट जाएं। 1937 तक कुल फसल क्षेत्र का 86 प्रतिशत कोलखोजों और सामूहिक खेतों के अधीन आ गया था, 89 प्रतिशत अनाज सामूहिक खेतों में पैदा हुआ और सरकार ने 87 प्रतिशत अन्न की वसूली इन्हीं खेतों से की।

सामूहिकीकरण की प्रकृति

सामूहिकीकरण को कभी-कभी 'दूसरी क्रांति' भी कहा जाता है क्योंकि इसने किसानों के जीवन को बोलशेविक क्रांति से भी ज़्यादा मौलिक रूप से प्रभावित किया। किसानों ने इसको अपने आप स्वीकार नहीं किया बल्कि इसे शहरी और सर्वहारा पार्टी के द्वारा जबरदस्ती लादा गया; कहने का तात्पर्य यह है कि यह प्रामाणिक रूप से ऊपर से आरोपित क्रांति थी। सामूहिकीकरण के पहले और बाद किसानों की स्थिति में प्रमुख और आधारभूत अंतर यह था कि एक सामूहिक किसान का सामूहिक खेती से उगाए अनाजों और नगदी फसलों पर कोई अधिकार नहीं था। अधिकांश सामूहिक खेत पूर्ववर्ती कम्युन के समान थे और किसानों की हालत लगभग कृषि दासों जैसी हो गई थी।

किसानों को बिना अनुमति खेत छोड़कर बाहर यात्रा पर जाने का अधिकार नहीं था; कृषकों के मन में यह बात घर करने लगी कि यह सामूहिकीकरण कृषिदास प्रथा का ही नया रूप था। किसान व्यंग्य किया करते थे कि अखिल संघ साम्यवादी दल (रूसी भाषा में वी.के.पी) ने दूसरी ''कृषि-दासता व्यवस्था'' (वतोरो क्रेपोस्तनो प्रावो) की व्याख्या की थी।

सामूहिकीकरण के द्वारा राज्य ने अनाज, आलू और सब्ज़ियों की वसूली बढ़ाई; इससे उद्योगों को कृषक मज़दूर मिले, परंतु इससे पशुधन की हानि हुई; कृषि का उत्पादन जारी रहा और ग्रामीण शहरी लोगों का जीवन स्तर कायम रहा। परंतु इसमें कृषि उत्पादन में किए

गए विस्तार से लोगों की बढ़ती माँग पूरी नहीं की जा सकी और इस अर्थ में यह असफल रहा।

अनाज उत्पादन, उपज और राज्य वसूली

वर्ष	अनाज उत्पादन मिलियन टन	उपज क्विंटल प्रतिहेक्टेयर	वसूली
1909—13	72.5	6.9	—
1928—32	73.6	7.5	18.1
1933—37	72.9	7.1	27.5
1938—40	77.9	7.7	32.1

स्रोतः मोशे लेविन, **द मेकिंग ऑफ द सोवियत सिस्टमः एस्सेज इन द सोशल हिस्ट्री ऑफ इन्टरवार रशिया,** लंदनः मेथ्यून, 1985, टेबुल 6.2 पृष्ठ 167

11.7 आतंक और शुद्धीकरण

सामूहिकीकरण और औद्योगीकरण के जबरदस्ती लागू करने से सोवियत जनता के जीवन में कोई सुधार नहीं आया बल्कि 'ऊपर से आरोपित क्रांति' का नवीनीकरण धीरे-धीरे आतंक के राज्य में परिणत हो गई। यह केवल किसानों और पूँजीवाद के बचे लोगों के खिलाफ ही नहीं था बल्कि आनेवाले वर्षों में औद्योगिक मज़दूरों और कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ भी इसने कार्यवाई की और लोगों को गिरफ्तार किया, मुकदमें चलाए गए और अंततः विरोधियों का सफाया करने वाले और आतंक मचाने वाले खुफिया पुलिस के खिलाफ भी यही कार्य किया गया।

1930 के दशक में स्टालिन की कम से कम तीन राजनैतिक ज़रूरतों की चर्चा इतिहासकारों ने की है। सबसे पहले साम्यवादी दल के भीतर उसकी नीतियों के खिलाफ उठने वाले विरोधी स्वरों और आलोचनाओं को दबाना था। 1933-34 में इसी दबाव के कारण औद्योगीकरण और सामूहिकीकरण अभियान में ढ़ील दी गई, कार्यशील लोगों को रियायतें दी गई और पूर्व विरोधियों से समझौता किया गया। उनकी दूसरी ज़रूरत न केवल विरोधियों को परास्त करना था बल्कि सभी प्रकार के संभावित विरोधों को जड़ से उखाड़ फेंकना था और उन पर आक्रमण करने के साथ-साथ दलीय नेतृत्व की जनतांत्रिक परम्पराओं में निहित आलोचना के स्वरों को समाप्त करना था। इसकी परिणति स्टालिन की तीसरी ज़रूरत के रूप में हुई जिसमें उन्होंने एकदलीय शासन व्यवस्था को एकशासक राज्य सत्ता में बदलने का प्रयास किया। अपने इस कार्य के समर्थन में स्टालिन केवल यही तर्क दिया करता था कि वह यह सब कुछ राज्य सत्ता के खिलाफ हो रहे षड़्यंत्र को रोकने के लिए कर रहा था। उसका कहना था कि इस षड़्यत्र में केवल पूरे देश का दलीय संगठन ही नहीं बल्कि क्रांति के बाद के आभिजात्य लोग और संजाल जैसे खुफिया पुलिस और सेना भी शामिल थी। बिगड़ती अंतरराष्ट्रीय स्थिति और युद्ध का खतरा दिखाकर बताया गया कि शासन खतरे में था परंतु जिन लोगों को मारा गया उनमें से एक भी व्यक्ति को प्रमाणिक रूप से जासूस या षड़्यंत्रकारी साबित नहीं किया गया।

चार मुकदमे

1936, 1937 और 1938 में चार मुकदमे चलाए गए जो शुद्धीकरण द्वारा विरोधियों को समाप्त करने के सबसे नाटकीय उदाहरण थे।

1) अगस्त 1936 में '16 लोगों पर चलाए गए मुकदमे' में अभियोगकर्ता विशिंस्की द्वारा कामनेव, जिनौविव और अन्य लोगों पर ट्रॉटस्की के साथ षड़्यंत्र कर राज्य सत्ता को उखाड़ने और स्टालिन तथा पोलितब्यूरो के अन्य सदस्यों को हटाने का आरोप लगाया गया। आरोपियों ने कथित रूप से अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को स्वीकार किया और 'दक्षिणपंथियों विरोधियों को दोषी ठहराया गया और प्रतिवादियों को गोली मार दी गई।

2) जनवरी 1937 को '17 लोगों पर चले मुकदमे' में पियताकोव, मुरालोव और राडेक जैसे लोगों पर जापान और जर्मनी से मिलकर षड़्यंत्र करने का आरोप लगाया गया। उन्होंने अपराध स्वीकार किया और उन्हें भी मृत्युदंड दिया गया।

3) लाल सेना को प्रभावी बनाने वाले मार्शल तूखाचेवेस्की और अन्य सेना प्रमुखों ने इन मुकदमों की जमकर आलोचना की। मई 1937 में उन्हें और अन्य प्रमुख सेनाध्यक्षों को गिरफ्तार किया गया और उन पर जर्मनी और जापान के साथ मिलकर षड़्यंत्र करने का आरोप लगाया; उन्हें भी गोली मार दी गई।

4) मार्च 1938 में '21 लोगों पर चले मुकदमे' में बुखारिन, रीकोव और इगोडा भी शामिल थे। अभियोगकर्ताओं ने यह दावा किया कि विदेशी जासूसी एजेंसियां सोवियत रूस में बुर्जुआ पूँजीवादी राज्य सत्ता की स्थापना के लिए दक्षिणपंथी और ट्रॉटस्की के समर्थकों का एक दल निर्मित करना चाहती थी और सोवियत रूस से गैर-रूसी क्षेत्र को अलग कर देना चाहती थीं।

ये बस हिमशैल का ऊपरी सिरा हैं। 1937 और 1938 के पूरे दो वर्षों में सरकार, पार्टी, मज़दूर और सेना और यहाँ तक कि पुलिस में काम करने वाले साम्यवादी उच्च अधिकारियों को 'जनता का शत्रु' कहकर गिरफ्तार किया गया और वे जेलों और श्रमिक शिविरों में लापता हो गये। स्टालिन के अलावा लेनिन के पोलित ब्यूरो के सभी सदस्यों पर या तो मुकदमा चलाकर मार दिया गया या दूसरे तरीकों से उनकी मृत्यु हो गई। एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री, साम्यवादी अंतरराष्ट्रीय (कॉमिन्टर्न) के दो भूतपूर्व अध्यक्ष, मज़दूर संगठन के प्रमुख और राजनैतिक पुलिस के दो अध्यक्षों को मृत्युदंड दिया गया।

शुद्धीकरण और साम्यवादी दल

आनुपातिक रूप से शुद्धीकरण का सबसे ज़्यादा असर दल के भीतर हुआ। क्रांति के पहले भूमिगत रहकर, गृहयुद्ध और सामूहिकीकरण के युग तथा पंचवर्षीय योजना के दौरान पनपे साम्यवादी नेताओं के समूह को नेस्तनाबूद कर दिया गया। 1941 में जब रूस ने द्वितीय विश्वयुद्ध में हिस्सा लिया तब तक रूसी क्रांति के नेतृत्व से उसके सारे सम्पर्क लगभग टूट चुके थे। इस प्रकार आंतक के राज्य ने पुराने साम्यवादी दल को नष्ट कर दिया जिसे बाद में ख्रुश्चेव के ज़माने से पहले फिर से गंभीरतापूर्वक गठित नहीं किया जा सका। पुराने साम्यवादी दल के नष्ट हो जाने से स्टालिन की पार्टी, सरकार और देश पर पकड़ मज़बूत हो गई।

शुद्धीकरण और सेना

केवल दल ही ध्वस्त नहीं हुआ बल्कि सेना के स्थापित आभिजात्य वर्ग को भी नष्ट कर दिया गया। महान शुद्धीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत सोवियत सेना के 35 से 50 प्रतिशत सेनाधिकारियों का सफाया कर दिया गया। सेनाध्यक्ष कार्यालय के जाने-माने सदस्य जैसे मार्शल तुखासेवेस्की और ब्लूशर और जेनरल गमारनिक और याकिर को मार दिया गया।

उसके अलावा सर्वोच्च युद्ध परिषद के सदस्यों, पाँच में से तीन मार्शलों, सोलह में से चौदह सेनाध्यक्षों और सभी एडमिरलों की हत्या कर दी गई। ज़िला के सभी सेना प्रमुखों, रेजिमेंटल कमांडर में से आधे लोगों तथा एक को छोड़कर सभी फ्लीट कमांडरों भी प्रभावित हुए।

इन शुद्धीकरण कार्यक्रमों के चलते लाल सेना की देशभक्ति का अपमान हुआ और इससे सेना कमज़ोर हो गई। नाजियों के खिलाफ युद्ध करते समय जितने वरिष्ठ सेना अधिकारी नहीं मारे गए थे, उससे ज़्यादा इस शुद्धीकरण कार्यक्रम के दौरान मारे गए।

शुद्धीकरण और सोवियत समाज

1930 के दशक का आतंक जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर गया और सोवियत जनता ने बहुत गहराई से इसे अनुभव किया। अधिकांश अनुमान इस बात से सहमत हैं कि 5 प्रतिशत लोगों को जेल में डाल दिया गया था; लगभग अस्सी लाख लोगों को बंदी बनाया गया था जिसमें शायद 10 प्रतिशत लोगों की हत्या कर दी गई। 1938 तक लगभग हर दूसरे सोवियत परिवार में से एक व्यक्ति जेल में बद था। शिक्षित समुदायों में यह अनुपात और भी ज़्यादा था।

1930 के दशक का आतंक सामूहिकीकरण से इस अर्थ में भिन्न था कि यह शहरी जनसंख्या, राजनैतिक नेताओं, सैनिक अधिकारियों तथा पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी आभिजात्य वर्गों के खिलाफ था। लोगों को इसलिए दंड दिया गया क्योंकि उन पर शक था कि वे सोवियत समाज को नुकसान पहुँचा सकते थे। इसका निर्धारण उनके सामाजिक वर्गीकरण, सामाजिक उत्पत्ति, राष्ट्रीयता या समूह सदस्यता के आधार पर किया गया। सामाजिक वर्गीकरण लोगों की नियति का आधार बन गया।

यह बताना ज़रा मुश्किल है कि कितने लोगों को गिरफ्तार किया गया और कितने लोगों को मार डाला गया क्योंकि ये आँकड़ें अभी भी फाइलों में बंद हैं। 1990 में सोवियत अनुसंधानकर्ताओं ने दावा किया कि 1931 और 1953 के बीच सरकारी ट्रिब्यूनल ने लगभग चालिस लाख को हिरासत में ले लिया जिनमें से 20% लोगों को मृत्युदंड दिया गया परंतु बहुत लोगों की मौत दर्ज नहीं की गई और आँकड़ों में हेर-फेर किया गया, खो गए या नष्ट कर दिए गए। इसलिए ये संख्या निश्चित रूप से सत्य से बहुत दूर है और इनमें आँकड़ों को बहुत कम करके बताया गया है।

बोध प्रश्न 4

1) कृषि सामूहिकीकरण को किस प्रकार लागू किया गया। 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

2) सामूहिकीकरण अभियान के प्रति किसानों की क्या प्रतिक्रिया हुई? पचास शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

3) 1930 के दशक में इतिहासकारों के अनुसार स्टालिन की प्रमुख राजनीतिक, प्राथमिकताएं क्या थी? पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

4) 1930 के दशक में शुद्धीकरण ने कम्युनिस्ट पार्टी और सशस्त्र बलों को कैसे प्रभावित किया? पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

11.8 सारांश

इस इकाई में हमने समाजवादी दुनिया के निर्माण से जुड़े पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। समाजवादी क्रांति से पूर्व की स्थिति, समाजवादी क्रांति का होना और अपनी सभी बाध्यताओं और समस्याओं के साथ समाजवादी राज्य की कार्य-प्रणाली।

जैसा कि आप जानते हैं, समाजवाद एक मानव समाज के नजरिए के रूप में 19वीं शताब्दी में यूरोप के अनेक बुद्धिजीवियों की सोच पर हावी हो गया था। समाजवादी क्रांति, अपने तरह की प्रथम क्रांति, वास्तव में रूसी साम्राज्य में ही हुई थी। इस इकाई ने उन कारकों के बारे में बताया जिन्होंने रूस में एक क्रांतिकारी परिस्थिति पैदा की और अंततः इसको जन्म दिया। क्रांति तीन चरणों में हुई – 1905 में संसद का निर्माण, फरवरी 1917 में एक उदार बुर्जुआ शासन का निर्माण और अंत में अक्टूबर 1917 में बौल्सेविकों के नेतृत्व में श्रमिक सोवियत द्वारा सत्ता पर कब्जा।

नये समाजवादी राज्य के सामने जबरदस्त समस्याएं थी और इसको विरोध का सामना करना पड़ाः एक शत्रुतापूर्ण पूँजीवादी विश्व और रूस में पुरानी व्यवस्था के नेतृत्व में एक गृह-युद्ध का। 1918 से 1921 तक इसने युद्ध साम्यवाद के एक चरण का सहारा लिया।

1921 में एक अन्य चरण नई आर्थिक नीति (एनईपी) की शुरुआत हुई जो 1928 तक चला। लेकिन नये समाजवादी राज्य का सुदृढ़ीकरण अभी खत्म नहीं हुआ था।

इस इकाई में महत्वपूर्ण पक्षों का विवेचन किया गया हैः योजनाबद्ध औद्योगीकरण, कृषि का सामूहिकीकरण और 1930 के दशक का शुद्धीकरण या संहार। योजनाबद्ध औद्योगीकरण के तहत पाँच वर्षों के लिए औद्योगिक उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया और व्यवस्थित रूप से इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया। कृषि के सामूहिकीकरण के द्वारा निजी खेतों को एक साथ मिला दिया गया और उन पर आधुनिक ढंग से राज्य के नियंत्रण में खेती की गई। दल के भीतर और बाहर स्टालिन की नीतियों का बड़े पैमाने पर विरोध हुआ जो रूस की एकदलीय शासन व्यवस्था को एक शासक राज्य व्यवस्था में परिवर्तित करना चाहता था; परिणामस्वरूप 1930 के दशक में विरोधियों का शुद्धीकरण किया गया। इन शुद्धीकरण कार्यक्रमों के तहत पुराने बोलशेविक, लेनिन के पोलित ब्यूरो के सदस्यों, सेना के कई अधिकारियों और राज्य के अनेक अधिकारियों को मृत्युदंड दिया गया। वस्तुतः जिसने भी स्टालिन की नीतियों से अपनी असहमति जताई उसे मौत के घाट उतार दिया गया। सामूहिकीकरण में निशाना ग्रामीण जनता को बनाया गया था जबकि 1930 के दशकों के शुद्धीकरण कार्यक्रम में मुख्य रूप से शहरी लोगों, सेना के उच्च अधिकारियों और राजनेताओं तथा शिक्षित जनता को निशाना बनाया गया था। यह कहा जा सकता है कि 1930 के दशक की सरकारी नीतियों के लिए रूसी समाज को भारी कीमत चुकानी पड़ी थी।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपको रूस में उदार संवैधानिकता और संसदीय लोकतंत्र की अनुपस्थिति का उल्लेख करना चाहिए। देखें भाग 11.2
2) पूर्व क्रांतिकारी रूस में आपको समाजवादी क्रांतिकारी, उदारवादियों और सामाजिक जनतंत्रियों का उल्लेख करना चाहिए। उपभाग 11.2.4 देखें
3) आपको 1905 से विभिन्न चरणों पर जोर देना चाहिए जिनके माध्यम से क्रांति को अन्जाम दिया गया। उपभाग 11.2.5 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) आपको विधान और लोकप्रिय पहल के माध्यम से लाए गये परिवर्तन का जिक्र करना है। भाग 11.3 देखें।
2) आपको राजनीतिक और आर्थिक संकट का सामना करने के लिए नीति में बदलावों का उल्लेख करना चाहिए। भाग 11.4 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) योजनाबद्ध उद्योग में औद्योगिक विकास की दिशा पूर्व निर्धारित होती है और पाँच वर्षों के उत्पादन के लिए उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया जाता है। देखिए भाग 11.5
2) सोवियत रूस में कम समय में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। देखिए भाग 11.5.

बोध प्रश्न 4

1) नई आर्थिक नीति (एनईपी) के अंतर्गत खेती योग्य ज़मीन जो कुलकों (अमीर किसान) के नियंत्रण में थी उसे सामूहिकों के नियंत्रण में ले लिया गया। अब खेती के लिए आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सकता था। देखिए भाग 11.6

2) हालांकि सभी वर्ग के किसानों ने सोवियत सरकार के सामूहिकीकरण अभियान का विरोध किया परंतु समृद्ध किसानों ने ज़्यादा विरोध किया क्योंकि उनका नुकसान ज़्यादा होना था। देखिए भाग 11.6

3) इस प्रश्न का उत्तर देते समय बताइए कि स्टालिन ने एकदलीय सत्ता से एक शासक सत्ता की ओर बढ़ने के लिए किस प्रकार अपने सभी राजनैतिक विरोधों का सफाया कर दिया। देखिए भाग 11.7

4) शुद्धीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत पुराने साम्यवादी दल का और क्रांति के समय के सैनिक नेतृत्व वर्ग का सफाया कर दिया गया। देखिए भाग 11.7